SYLLABUS

B.Com I Year

Subject – MORAL VALUES & LANGUAGES

UNIT – I	1. स्वतंत्रता पुकारती (कविता) – जयाशंकर प्रसाद 2. पुष्प की अभिलाषा (कविता) – माखनलाल चतुर्वेदी 3. वाक्य संरचना और अशुद्धियाँ (संकलित)
UNIT – II	हिन्दी भाषा – 1. पूस की रात कहानी प्रेमचंद 2. अप्पदीपो भव लेख स्वामी श्रद्धानंद 3. पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी एवं शब्दयुग्म शब्द (संकलित)
UNIT – III	हिन्दी भाषा – 1. भगवान बुद्ध (निबंध) – स्वामी विवेकानंद 2. कछुआ धर्म– चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 3. नहीं रूकती है नदी – हीराल बाछोतिया 4. पल्लवन
UNIT – IV	हिन्दी भाषा – 1. अफसर निबंध – शरद जोशी 2. हमारी सांस्कृतिक एकता संग्रह में भारत एक है (निबंध) रामधारी सिंह दिनकर (एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत) 3. संक्षेपण (संकलित)
UNIT – V	हिन्दी भाषा – 1. नैतिक मूल्य परिचय और वर्गीकरण आलेख डॉ. शशि राय 2. आचरण की सभ्यता (निबंध) – सरदार पूर्णसिंह 3. अन्तर्ज्ञान एवं नैतिक जीवन लेख डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

renaissance
renaissance
renaissance

इकाई–1

स्वतंत्रता पुकारती

कवि –जयषंकर प्रसाद कें नाटक चन्दगुप्त से ली गई कविता स्वतंत्रता पुकारती में कवि ने स्वतंत्रता का मानवीकरण किया है। कविता में कवि ने युवाओं में देष –प्रेम कें प्रति प्रेरणा देने का कार्य किया है। हिमालय की ऊँची चोटी से सरस्वती रूपी बुधदि चेतन्यषुध्द व निर्मल भारती स्वयं अपने ही प्रकाष से स्वतंत्रता हमें पुकार रही हैं जन –जन से आहवान कर रही है कि तुम देवताओं की संतान हो जो कभी भी पराजित नही होते तुम यह प्रतिज्ञा कर लो कि तुम स्वतंत्रता को बचाएँ रखने कें लिए अपने प्राणो का त्याग कर सकते हो यही धर्म है यही पुण्य का सही सच्चा रास्ता है इसी पर बढ़तें जाना है। यौध्दाओं की कीर्ति और यष जिस प्रकार सूर्य की किरणों से प्रकाष फैलता है उसी पवित्र और उष्मा स्वतंत्रता के लिए एक प्रकार की आग है अर्थात वीर पुरूष अपने देष की स्वतंत्रता को बचाए रखने कें लिए पुर्णरूप से तैयार है। तुम मातभूमि कें सपुत हो रूको मत षूरवीर साहसी हो तुम आगे बढ़ते रहो षत्रुरूपी समुद्र में अग्नि की तरह बढ़ते चलो सच्चे वीर हो विजयी बनों और की ओर बढ़े चलो।

विषेष – कविता राष्ट्रभक्ति से ओतप्रेत है राष्ट्रीय चेतना का भाव है। स्वतंत्रता पुकार रही है कि मेरी रक्षा का भार उठाने का भार वीरों पर है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह ––––––––––––––––––––––––––––––––––––अनेक

कवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित कविता पुष्प की अभिलाषा में कवि पुष्प से उसकी चाह को व्यक्त किया है।

पुष्प की यह इच्छा नही है कि मैं किसी सुन्दरी कें बालों का गजरा बनूँ वह यह भी नही चाहता है कि मैं दो प्रेमियों कें लिए माला बनूँ न किसी राजा के षव पर मुझे चढ़ाया जाए और मैं अपने आप को भाग्यषाली मानू वह वनमाली से कहता है कि हे वनमाली मुझे तोड़कर उस राह में फेंक देना जहाँ षूरवीर के पैरों तले आकर खुद पर गर्व महसूस कर लुँगा।

कवि– माखनलाल चतुर्वेदी की चार पुस्तकें

रचनाए– हिमकिरीटनी, हिमवरंगिनी, माता, युगचरण

पुष्प की अभिलाषा कविता कवि ने विलासपुर जेल में 1921 में लिखी।

यह कविता हिमकिरीटनी से ली गई है।

ज्नवरी 1965 में मध्यपदेष षासन ने खंडवा में आपका नागरिक अभिनंदन कर एक भारतीय आत्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया।

वाक्य संरचना और अषुध्दियाँ

किसी विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह या षब्द वाक्य कहलाता है।

वाक्य के भेद–

रचना की दृष्टि से तीन भेद–

(1)सरल वाक्य –ऐसा वाक्य जिसमें एक कर्ता और एक क्रिया हो उसे सरल या साधारण वाक्य कहते है।

जैसे– राम पढ़ता है।

मोहन दौड़ता है।

बादल गरजे।

(2)मिश्रवाक्य– जस वाक्य में एक सरल वाक्य के अतिरिक्त कोई दूसरा उपवाक्य हो उसे मिश्रवाक्य कहते है।

जैसे–वह कौंन–सा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो।

(3)संयुक्त वाक्य– जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है,उसे संयुक्त वाक्य कहते है।

जैसे– मे घर पहुँचा कि पानी बरसने लगा और पानी इतना बरसा कि ठंड बढ़ गयी।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्य कें आठ भेद होते है–

(1)विधिवाचक वाक्य – जिस वाक्य से किसी बात कें होने का बोध हो, उसे विधिवाचक वाक्य कहते है।

जैसे–हम खा चुके। (सरल वाक्य)

मैं खाना खा चुका, तब वह आया। (मिश्र वाक्य)

मैनें खाना खाया और मेरी भूख मिट गयी।(संयुक्त वाक्य)

(2)निषेधवाचाक – जिससे किसी बात के न होने का बोध हो

जैसे– मैं बाजार नही गया।

(3)आज्ञावाचक –जिस वाक्य से किसी तरह की आज्ञा का बोध हो उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

तुम क्या कर रहे हो?

(4)प्रष्नवाचक– जिस वाक्य से किसी प्रकार के प्रष्न का बोध हो उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे तुम चुपचाप बैठों।

(5)विस्मयादिबोधक– जिस वाक्य से किसी प्रकार के विस्मय, आष्चर्य, दुख व सुख का बोध हो उसे प्रष्नवाचक वाक्य कहते है।

जैसे– वाह! तुम्हारे क्या कहने!

ओह! डसके पैरो से खून निकल रहा है।

(6)सन्देह वाचक–जिस वाक्य में किसी बात का सन्देह प्रकट हो। उसे सन्देहवाचक वाक्य कहते है।

(7) संकेतवाचक वाक्य– इस वाक्य में एक वाक्य दुसरे की सम्भावना पर निर्भर करता है। जैसे– यदि तुम चलो, तो मैं भी चलूँ बरसात न होती तो,फसल सुख जाती।

(8) इच्छावाचक – जिस वाक्य से किसी प्रकार की इच्छा या षुभकामना प्रकट हो उसे इच्छावाचक वाक्य कहते है।

जैसे– तुम अपने उद्देष्य में सफल हो।

वह परीक्षा में उतीर्ण हो।

वाक्य की अषुध्दियाँ

भाषा में षुद्ध प्रयोगों का बड़ा महत्व है, और यह षुद्ध प्रयोग बहुत कुछ व्याकरण झान पर आधारित है।

(1)उच्चारण और वर्तनीगत

(2)षब्दगत

(3)षब्दार्थगत

(4)वाक्यगत

renaissance
renaissance
renaissance

पूस की रात॰

कहानी का सारांश दृ

कहानी ‘पूस की रात॰ में हल्कू के माध्यम से कहानी कार ने भारतीय कसान की लाचारी का यथार्थ चत्रण कया है । बहुत साल पहले की बात है । उत्तर भारत के कसी एक गाँव में हल्कू नामक एक गरीब कसान अपनी पत्नी के साथ रहता था । कसी की जमीन में खेती करता था । पर आमदानी कुछ भी नहीं थी । उसकी पत्नी खेती करना छोडकर और कहीं मजदूरी करने कहती थी ।

हल्कू के लगान के तीर पर दूसरों की खेती थी । खेते के मा लक का बकाया था । हल्कू ने अपनी पत्नी से तीन रुपए माँगे । पत्नी ने देने से इनकार कयाए ये तीन रु पए जाडे की रातों से बचने के लएए कंबल खरीदने के लये जमा करके रखे थे । मा लक के तगादे और गा लयों से डरकर उसने वे तीन रु पए निकलकर दे दिए । ज मंदार रु पए लेकर चला गया ।

पूस मास आ गया । अंधेरी रात थी । कडाके की सर्दी थी । हल्कू अपने खेत के एक कनारे ऊख के पत्तों की छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर पडा था । अपनी पुरानी चादर ओडे ठिठुर रहा था । खाट के नीचे उसका पालतू कुत्ता जबरा पडा कुँ.कूँ कर रहा था । वह भी ठण्ड से ठिठुर रहा था । हल्कू को उसके हालत पर तरस आ रहा था । उसने जबरा से कहा.ष्तू अब ठंड खाए मैं क्या करुँ ध यहाँ आने की क्या जरुरत थी छ हल्कू बहुत देर तक कुत्ते से बातें करता रहा । जब ठंड के कारण उसे नींद नहीं आईए तब कुत्ते को अपने गोद में सुला लया । उसके शरीर के गर्मी से हल्कू को सुख मला । कुछ घण्टे बीत गये । कोई आहट पाकर जबरा उठा और भौंकने लगा । उसे अपने कर्तव्य का मान था ।

हल्कू के खेत के समीप ही आमों का बाग था । बाग में पत्तियों का ढेर कयाए पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड के लाया । उसे सुलगाया और अपने खेत में आकर वहाँ के पत्तियों को भी सुलगाया । हल्कू और कुत्ते दोनों आग तापने लगे । ठंड की असीम शक्ति पर वजय पाकर वह वजय गर्व को हृदय में छिपा न सकता था । वह कंबल ओढकर सो जाता है ।

उसी समय नजदीक में आहट पाकर जबरा भौंकने लगा । कई जानवारों का एक झुण्ड खेत में आया था । शायद नील गायों का झुण्ड था । उनके कूदने.दौडने की आवजें साफ कान में आ रही थी । फर ऐसा मालूम हुआ क वे खेत में चर रही हैं । जबरा तो भौंकता रहा । फर भी हल्कू को उठने का मन नहीं हुआ ।

जबरा तो भौंकता। था । नील गायें खेत का सफाया कये डालती थी । और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था और धीरे.धीरे चादर ओढकर सो गया । उदर नील गायों ने रात भर चरकर खेती की सारी फसल को बरबाद कया था । सबेरे उसकी नींद खुली । मुन्नी ने उससे कहा.ष्ण्ण्तुम यहाँ आकर रम गये । और उधर सारा खेत सत्य नाश हो गया ।ण्ण्ष दोनों खेत के पास आ गये । मुन्नी ने उदास होकर कहा.अब मजूरी करके पेट पालना पडेगा । हल्कू ने कहा.ष्रात की ठण्ड में यहाँ सोना तो

न पडेगा ।ष उसने यह बात बडी प्रसन्नता से कहीए उसे ऐसी खेती करने से मजूरी करना बहुत हद तक आरामदायक है । मजूरी करने में झंझट तो नहीं हैं ।

वशेषताएँ दृ

कहानी में कृषक जीवन की दुर्बलता और सबलता की झाँकी दिखाना है । कृषक याने कसान एक एक दृष्टि से सबल होता है । वह कडी मेहनत करता है । पैसा.पैसा काँट.छाँटकर बचा रखता है । फर हर प्रकार के कष्ट सहन करता है । जाडे में ठिठुरता हैएज मंदार की गाली सुनता हैए फर भी काम करता जाता है । यही उसकी सबलता है । वह दुर्बल हैए क्यों क उसमें ज मंदार के अन्याय के वरुद्ध खडा होने की हिम्मत नहीं है । परिस्थितियाँ इसके लए जिम्मेदार हैं । हल्कू ने अपनी मेहनत की कमाई ज मंदार को दी और खुद पूस की रात में ठण्ड से ठिठुरने लगा । यही उसकी कमजोरी है । परिस्थितियों की दबाव के कारण नील गायों से अपनी फसल की रक्षा भी न कर सका । अतः कहानी कार ने कसान की ववशता के लए जिम्मेदारी शक्तियों के प्रति व्यंग्य कया है ।

ष अप्प दीपो भवश

ष्अप्प दीपो भवश स्वामी श्रद्धानंद द्वारा सत् 1914 ये दीक्षान्त समारोह में दिया गया एक भाषण है । इसमें स्वामी श्रद्धानंद ने परमात्मा को सत्य का स्वरुप बताया है तथा सत्य को मनए कर्मए वचनए क्रया हाँस स्वीकार करने क्रो प्रेरित कया हैएक्योकि यह सत्य ही ईश्वर स्वरूप है ।

स्वामीजी ने धर्म के मार्ग पर चलकर मनुष्य को मर्यादित होने का पाठ पढाया। उन्होंने मनुष्य के हदय को परमात्मा का स्थान बताया हैए वही धर्म का मार्ग प्रशस्त करता है । इस लए आत्मा के शुद्ध भाव से परखकर उसकी बाणी जो सुनो और उसके अनुसार हो आचरण करों वहीं तुम्हें सत्य मार्ग पर लेश्जायेगा ।

स्वामीजी अपने शष्यों से गुरु दक्षिणा सर्फ यह चाहते है क ऐसा कोई कार्य न केरे जिसके कारण उन्हें ईश्वर के दरबार में तथा स्वय की आत्मा से लज्जित होना पडे । माता. पताए अति धए आचारों को देवतास्वरूप समझकर उनकी

रोया करना धर्म समझो के सदगुणोंए सदूंभावों का अनुकरण करो तथा उन्हें ज्ञान के मार्ग का ज्योतिस्तंभ बनाओ । जीवन है अपना सच्चा पथ.प्रदर्शक महापुरुष ही हो सकता हैए उनका अनुसरण करो ।

ईश्वर के द्वारा ज्ञान एवं बु द्ध हमे प्रदान की गई हैए उसे संसार में बाँटना चाहिए ।

हमें ईश्वर द्वारा हाथ दिए गए है उन्हें सदा खुला रखोए दूसरों की मदद करना चाहिए ।

जिस भारत की म ी से हमारी देह वनीए जिस गंगा के प वत्र जल का हमने पान कयाए उसके उज्जवल भ वष्य को संवारने का कार्य कों । ये मंत्र इस भारतभू म में युगों से गुरुमंत्र के रूप में गूंज रहे हैए इन्हें अपने जीबन में उतारे।

उन्होंने सत्य की महत्ता सद्ध करते हुए संसार क्रो सत्य पर आ श्रत बताया हैए सत्य के बिना सब मथ्या है । यही सत्य को तुम्हारे जीवन में उतारा है तब तुम्हारे जीबन व भ वष्य की कोई चता नहीं

शब्द (पर्यायवाची, अनेकार्थी, शब्दयुग्म, विलोम)

एक या एक से अ धक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है। जैसे(नहीं) न -एक वर्ण से नि र्मत शब्द - कुत्ता-अनेक वर्णों से नि र्मत शब्द (और) वए शेरए कमलए नयनए प्रासादए सर्वव्यापीए परमात्मा आदि

हिन्दी की शब्द संपदा– (पर्यायवाची, अनेकार्थी, शब्दयुग्म, विलोम)

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द

हिन्दी की शब्दावली में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनका वाच्यार्थ कोई एक ही व्यक्ति, एक ही वस्तु आदि होते हैं। इस प्रकार के शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

आकाश	अंबर, गगन, नभ, व्योग, अनंत, आसमान, शून्य, आंतरिक्ष।
अग्नि	आग, पावक, ज्वाला, हुताशन, वाह्नि, अनल।
अंधकार	अंधेरा, तम, तिमिर।
अन्य	भिन्न, पृथक और दूसरा।
आनंद	प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास, खुशी।
आज्ञा	आदेश, निर्देश, हुक्म।
इच्छा	अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, मनोरथ, ख्वाहिश
अंहकार	घमण्ड, अभिमान, दंभ, दर्प, गर्व।
आँख	दृग, लोचन, चक्षु, नेत्र, नयन, विलोचन, अक्षि।
इन्द्र	महेन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र, सुरपति, सुरेश।
ईश्वर	परमेश्वर, प्रभु, भगवान, परमात्मा, ईश।
इन्द्रपुरी	देवलोक, देवपुरी, अमरावती, अलकापुरी, स्वर्ग।
उत्साह	उमंग, जोश, आवेग।
उन्नति	अभ्युदय, उत्थान, विकास, प्रगति, उत्कर्ष।
कान	कर्ण, श्रवण, त्रुतिपट, श्रवणोन्द्रिय।
किनारा	तट, तीर, कूल।
गहना	आभूषण, विभूषण, अंलकार, भूषण।
चाँदनी	ज्योत्सना, कौमुदी, चन्द्रिका।
तारा	नक्षत्र, तारक, नखत, तारिका उड्डु।
तालाब	सर, सरोवर, पुष्कर, तड़ाग, जलाशय।
जल	पानी, नीर, वारि, अंबू, सलिल, अमृत, जीवन, तोय, पेय।
नदी	सरिता, तरंगिणी, तपस्विनी, दरिया।

पहाड़	गिरि, पर्वत, भूधर, अचल, गिरीश्वर, नग शैल।
रात	रजनी, निशा, विभावरी, रात्रि, निशि।
समुद्र	जलधि, पयोधि, उदधि, सागर, अंबुधि, सिन्धु।
सर्प	साँप, नाग अहि, भुजंग, विषधर, पन्नग, ब्याल।
पत्थर	पाषाण, उपल, पाहन, प्रस्तर, अश्म।
पथिक	राहगीर, बटरोही, राही, बटाऊ, यात्री, मुसाफिर।
पवित्र	पावन पूत, रूचि, शुद्ध, पुण्य, निर्मल, अकलुष, निरकलुष।
प्रकाश	उजाला, ज्योति, चमक, द्युति, प्रभा, रोशनी।
मनुष्य	इंसान, नर, आदमी, मानव।
सूरज	दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, भानु, सविता, आदित्य, रवि, दिनेश, भास्कर।
रास्ता	बाट, डगर, मार्ग, पथ, मग, राह।

समश्रुति भिन्नार्थक शब्द या श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (मिलती जुलती ध्वनि वाले शब्द अथवा समरूप) – वे शब्द जो सुनने में समान प्रतीत होते हैं लेकिन जिनकी वर्तनी में सुक्ष्म अंतर परिलक्षित होता हैं तथा जो अर्थ भी भिन्न देते हैं –

अंश	भाग
अंस	कंधा
अनल	आग
अनिल	हवा
अपकार	बुरा करना
उपकार	भलाई
कक्षा	श्रेणी
कक्ष	कमरा
बात	बातचीत
वात	वायु
अली	भौंरा
अली	सखी

अनेकार्थी शब्द

भाषा की शब्दावली में वस्तुतः कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके एक से अधिक वाक्यार्थ कोश में दिये होते हैं। ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं। यथा

1. अक्षर – नष्ट न होन वाला, स्वर–व्यंजन वर्ण, हे ईश्वर
2. अर्थ – धन, आशय, व्याख्या
3. कर – हाथ, किरण, हाथी, की सूँड, टैक्स
4. कल – चैन, बीता हुआ दिन, आने वाला दिन, मशीन
5. काल – समय, मृत्यु
6. गुरू – शिक्षक, भारी, वृहस्पति, बड़ा, श्रेष्ठ

7. पत्र – चिट्ठी, पत्ता, पंख
8. मधु – शहद, शराब, पुष्प का रस
9. वर – श्रेष्ठ, वरदान, दूल्हा

शब्द युग्म

सामान्य परिचय – हिन्दी भाषा में शब्दों के कुछ ऐसे जोड़े प्रचलित हैं जिनका प्रयोग साहित्यिक हिन्दी में ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक हिन्दी में किया जाता है। ये जोड़े समानार्थ शब्दों के भी होते हैं और विपरीत अर्थ वाले शब्दों के भी होते हैं। इन्हे शब्द–युग्म कहा जाता है। इनके प्रयोग से वाक्य में प्रखरता और विचारों में स्पष्टता आ जाती है। शैली भी अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली एवं प्रवाहमयी बन जाती है।

शब्द– युग्मों के कुछ उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं।

(क)एक साथ प्रयुक्त दो समानार्थी शब्द

आगे–आगे	बैठे–ठाले	गरमा–गरम	भाग–दौड़
	रोना–चिल्लाना	देवी–देवता	संगी–साथी

(ख) एक साथ प्रयुक्त दो भिन्नार्थी शब्द

अमीर–गरीब	जय–पराजय	मान–अपमान	अनुनय–विनय
गाली–गलौच	आगा–पीछा	राजा–रंक	चोर–चपाट
माँ–बाप	खाद्य–अखाद्य	आदान–प्रदान	धूम–धाम

(ग) सार्थक और निरर्थक शब्दों का एक साथ प्रयोग

आना–वाना	कुर्ता–उर्ता	मारना–वारना	धोती–ओती
हलुआ–वलुआ	चमक–वमक	मिठाई–विठाई	काम–वाम

;अनेकार्थी शब्दकी परिभाष(

दूसरे शब्दों में - जिन शब्दों के एक से अ धक अर्थ होते हैं ए उन्हें श्अनेकार्थी शब्द श कहते है।

अनेकार्थी का अर्थ है दृ एक से अ धक अर्थ देने वाला।

अंबर- आकाशएअमृतए वस्त्र।

अनंत- आकाशए ईश्वरए वष्णुए अंतहीनए शेष नाग।

कनक- सोनाए धतूराए गेंहूँ।

गुरु- शक्षकए ग्रह वशेषए श्रेष्ठए बृहस्पतिए भारीए बड़ाए भार।

जलज- कमलए मोतीए शंखए मछलीए चन्द्रमाए सेवार।

पानी- जलए चमकए इज्जत ।

फल- लाभए मेवाए नतीजाए भाले की नोक।

। ३

भगवान बुद्ध ;स्वामी ववेकानन्दद्ध

भगवान बुद्ध व्याख्यानए स्वामी ववेकानन्द द्वारा अमेरिका के डेट्राएट नगर में दिए हुए एक भाषण का "अंश है ए जिसमें उन्होंने भगवान बुद्ध एवं बौद्ध धर्म सम्बन्धी वचारो को व्यक्त करते हुए यह आत्मा का प्रयास कया क प्रत्येक धर्म की एक प्रकार की साधना होती है । बौद्ध धर्म में निष्काम कर्म का भाव अत्यन्त वक सत है । जातिगत भेदभाव से परे इस धर्म में कामनाओं और वासनाओं का दमन कया गया ।भगवान बुद्ध ने सदैव यह संदेश दिया क अपनी मुक्ति का मार्ग हम स्वय ही प्रशस्त कर सकते है । अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु कसी भी प्राणी मात्र को सताना या उसे दुख देना इस धर्म में पूर्ण रूप से वर्जित है ।

ईश्वर की प्राप्ति के लए यह कदा प आवश्यक नही है क हम दान धर्म यद्द क्षणा दे या फर बडे से बड़े धा र्मक अनुष्ठानों का आयोजन कराएँ । इस हेतु केवल यह आवश्यक है क हम मनुष्य जीवन में अच्छे कर्म केरे । निष्काम भाव से ही मनुष्य अपने जीवन में समस्त बाधाओं को पार करता हुआ मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है ।

कछुआ धर्म (चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी')

सारांश

चन्द्रधर शर्मा गुलेरीजी के कछुआ धर्म निबन्ध के माध्यम से निश्चित रूप से हिन्दुस्तानी सभ्यता और संस्कृति को नये विचारणीय आयाम प्रदान किए है। एक विचारात्मक निबन्ध है। गुलेरीजी ने यह स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास किया है कि मर्यादा और सीमा में रहकर संयोजित रूप से कार्य करते हुए मानवीय मूल्यों का संरक्षण करना नैतिकता, समन्वयता, सौहार्द्र जैसे गुणों को सर्वव्यापी बनाना हमारा कर्म होना चाहिए, लेकिन इसका आशय यह कदापि नहीं है कि हम अन्याय और अत्याचार को सहन करते जाय, क्योंकि जब तक हम कछुआ धर्म त्याग कर अन्याय के विरूद्ध आवाज नहीं उठायेंगे तब तक एक स्वच्छ व समाज की कल्पना करना निरर्थक है।

कछुआ धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए गुलेरीजी ने स्पष्ट किया है कि हिन्दू सभ्यता कछुआ धर्म का पालन बहुत तल्लीनता के साथ करती है। जिस प्रकार कछुआ विषम व विपरीत परिस्थितियों और संघर्षों में अपना सिर छिपा लेता है तथा अपनी लौह समान पीठ को अपनी ढाल बनाकर समस्या से बच निकलने की कोशिश करता है, ठीक वैसा ही समाज के कतिपय लोग करने लगे हैं। वे किसी समस्या का समाधान करने की अपेक्षा उससे बच निकलने का मार्ग निकालते रहते हैं। लेखक ने मनुष्य की भीरू प्रवृत्ति जैसे सत्य का साथ ना देना, अन्याय के विरूद्ध आवाज ना उठाना, अनुचित स्थितियों में बिना विरोधाभास के समायोजित हो जाना आदि पर कड़ा प्रहार करते हुए यह संदेश दिया है कि अपने स्वविवेक से काम लें। किसी के कहने पर शक्कर का सेवन बन्द कर देना, कुएँ पर पादरी द्वारा यह कह दिए जाने पर कि 'मैंने इसमें तुम्हारा अभक्ष्य डाल दिया है' बिना सोचे समझे जल फेंक देने की अपेक्षा मुम्बई जाकर पश्चाताप करना। यह सभी कृत्य मनुष्य की अवस्थ मानसिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत करते है।

नहीं रुकती है नदी ; हीरालाल खाछोतिया

श्नहीं रुकती नदीश डॉण् हीरालाल वाछोतिया द्वारा र चत एक ऐसा यात्रा वृतान्त हैए जिसने नर्मदा नदी की यात्रा क्रो पूरे सल सलेवार प्रस्तुत कया गया है । इस बृत्तान्त में लेखक ने नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक से लेकर क पलधारा तक की यात्रा का जीबन्त वर्णन कयाहै । नर्मदा नदी की भौगो लक दशाए प्राकृतिक सौन्दर्य एबं सास्कृतिक वैभव को लेखक ने जिन शब्दों के साथ प्रस्तुत कया है उसे पढकर वास्तव में प्रत्येक पाठक का हृदय प्रफुल्लित हो जाता है । लेखक द्वारा तय क्री गई नर्मदा नदी की यात्रा का सारांश निम्नानुसार है.

नववर्ष की मधुर वेला में हल्कीइ हल्की बारिश की बूंदों के बीच बिलासपुर से जीप द्वारा अमरकंटक की यात्रा पर लेखक निकल चुके थे । घने जंगलों के बीच के उबड़.खाबड़ रास्ते में कभी एकाध गाँव दिखाई पड़ जाता था । जीप को आगे बढाने के लए कई वार झा डयों को काटा जाता तभी आगे यहाँ की उम्मीद जाग्रत होती ।

रास्ते में श्अचानक गाँवश् कान्हा अभ्यारण क्षेत्रों को पर करते हुए सभी आगे बढ़ते जाते थे । अंततरू अमरकंटक नजदीक आता प्रतीत होता । कुछ दुकानों और बस्तियों के बीच नर्मदा मैया का मदिर दिखाई देते ही सभी नतमस्तकश्हो जाते । अमरकंटक का प्रकृतिक सौन्दर्य तो देखते ही बनता है । 3500 पुट ऊंचाई पर स्थित यह स्थल

एक ओर आस्था के केन्द्र के रुप में दिखाई पड़ता तो दूसरी ओर एक हिल स्टेशन प्रतीत होता है । नर्मदा मंदिर के दर्शन करने के बाद अनेको यात्री ओंकारेष्वर पर पडाव डालते । लेखक ने सोचा क अमरकंटक से प्रारम्भ हुई इस यात्रा में क पलधारा तक की परिक्रमा भी की जाए । मन में वचार आते ही निकले पडे । कुंड से कतनी छोटी.छोटी धारा निकलती और लगभग 5 कमीण की दूरी तय करते ही प्रवाहमय धारा बन जाती । क पल धारा ऐसा स्थान है जहाँ नर्मदा च ानों से लगभग भी फूट नीचे उतरती हैऔर एक सुन्दर जलप्रपात बनाती है । हरियाली के बीच लटकी हुई यह जलधारा एक अलौ कक सौन्दर्य का दृश्य प्रस्तुत करती है । जहाँ यह जलधारा नीचे गरती यहीं च ानों को काट.काटकर शैल आश्रम बनाये गये है जहाँ बैठकर ध्यान करते हुए

आत्मिक शांति का अनुभव कया जा सकता है । क पल मुनि ने इसी प वत्र स्थान पर ऋबैठकर तपस्या की थी । इस प्रकार वना रुकेए वना थके निब ध जाते से अ वरल प्रवाहमान होती नर्मदा पर्यटकों को रोमांच से परिपूर्ण कर देती । इस प्रकार अनेक शेल पर्वतों को पार करते हुए कोटितीर्थ से क पलधारा और क पलधारा से कोटितीर्थ तक

की परिक्रमा करते हुए नर्मदा नदी की यात्रा पूर्ण क्री गई । .

नर्मदा एक नदी नहीं है संस्कृतिक है . नर्मदा वास्तव में एक नदी नहीं अ पतु संस्कृति है नर्मदा का उद्गम

जहाँ से होता है वह अमरकटकरूपी प वत्र स्थल आस्था और प वत्रता के साथ आदिवासी धरोहर क्रो भी अपने भीतर समाहित कए हुए है । नर्मदा जिस मथ से होकर गुजरती हैए वह गोंडवाना कहलाता है । गोंडवाना में आदिवासी संस्कृति की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है । आदिमज़न की अनगढ़ता का सौन्दर्य एवं

कलात्मकता साजए सुलभ रूप से दिखाई पाती हैए नर्मदा की अगवानी पर बुंदेलीएनिमाडीए मालती भीली क्रो लोक.परम्परा आज भी जीवन्त है । यहीं लोकगीतों में नर्मदा को पतीत पाविनीए दरिद्रनारायण की रक्षकए अखण्ड सौभाग्य प्रदान करने चालीए मातृत्व से परिपूर्ण कहा गया है इस लए नर्मदा नदी एक संस्कृति है । इस संस्कृति की गूंज

से पूरा संसार वस्मित हैए आश्चर्यच कत है । नर्मदा नदी की प वत्रता और महानता का जितना बखान कया जाए वह कम है । इसकी प वत्रता क्रो लेकर हर स्थान पर एक नई कहानी मलती है । यह लोकजीवन क्रो प्रेरित भी करली हैं और आदर्श जीवन जीते हुए संघर्ष की राह से व्याकुल ना होने की दिशा में अग्रसर भी करती है ।

नर्मदा नदी अपनी इस यात्रा में कहीं भी वराम नहीं लेतीए बिना रुके पूर्ण प्रवाह के साथ निरन्तर बहती रहती है । मंडलाए डडोरीए बरगीए भेड़ाधाट आदि सभी स्थानों क्रो पार करने के पश्चात् भी नर्मदा नदी रुकती नहीं है ।

भेड़ाघाट मे वह श्यामल च ानों क्रो दू धया बचाती है । भेड़ाधाट मे ही सुंदरतम ज़ल.प्रपात का आँचल फहराकर प थकों क्रो कुछ क्षण वश्राम की प्रेरणा देती है । फर संगमरमरी च ानेंा के बीच बहती पर्यटकों क्रो रोका बिहार का सुख देती है ।

नर्मदा का पथ सतपुडा और प्र.मवाल के बीच से होकर गुजरता हैं । जगहइ जगह शैलर्तिश्रृंखलाएँ इसे रोकने जा खडी होती है और यह है भी अपनी रोज धारा से उन्हें काटती छाँटती वेग है आगे रढ़ती रहती है । कतनी ही छ्योटी.बडी नदियों क्रो यह गले लगाती बढती जाती है । शनकर ए दूधीए गंजालए मीरनए वाचक ए घोरल अतर न जाने

कतनी नदियों जो अपने क्षे की कंवदंतियों यों न मंदा के यशोगान में जोड़ती जाती है ।

renaissance

भारत एक है

प्रस्तुत निबन्ध "भारत एक है श रामधारी संह दिनकरजी को पुस्तक हमारी संस्कृतिक एकता से लया गया है हम निबन्ध में भारतीय संस्कृति की व वधता क्रोस्पष्ट करते हुए दिनकरजी ने लखा है क यदि हम भारत के नक्शे क्रो को देश के लोग भाग प्राकृतिक दृष्टि है स्पष्ट दिखाई पडते हैंश पहला भारत का उत्तरी भागए दूसरा से कृष्णा नदी के उत्तर तक का भाग तथा तीसरा और अन्तिम भाग कृष्णा नदी से लेकर अन्तदीप तक । भारत के इतिहास व प्राकृतिक ढांचे में ऐसी कोई जान अवश्य है जो कोई भी उसकी राष्टीय एकता व अखण्डता को नष्ट नहीं कर पायाए वहॉ की जलवायु रहन-सहनए खानपानएतीज त्यौहार सभी में मलता होने के पश्चात् भी मूरा राष्ट्र पूरा एक सूत्र में बॅधा हुआ है । हालां क भाषायी भेद इस एकता के समक्ष उपस्थित हो रहा है ए ले कन व्यापक प्रचार-प्रसार से स्थितियों नियंत्रित हो रहीं है । भारत के हिन्दू मुस्लिम दोनों ही वर्गों के बीच एक सास्कृतिक एकता है जो उन्हें दूसरे देशों से अलग बनाती है । तमाम भन्नताओं को समेटकर भारत एक पूर्ण देश बनने में सफल साबित हुआ है । मौर्यो द्वारा कन्धार को भारत में मला लेनेका प्रयास हो महमूद गजनी द्वारा भारत पर राज करने की प्रबल इच्छा हो ए समी नाकामयाब सद्ध इस मायने मे हुई क प्रकृति ने भारत को एक स्वतंत्र देश के रूप में अपनी पहचान बनाने का जो अनुपम उपहार प्रदत्त कया है वह हम सभी के लए गौरव की बात है । भारत का कोई भी भाग यदि भारत से अलग होकर स्वतंत्र होने की को शश करे को यह अप्राकृतिक ब अस्वाभा वक लगता है ।

श्अफसरश्

सारांश

शरद जोशी अपनी व्यंग्य रचना श्अफसरश्में देश में फैली अफसरशाही की ओर इं गत करना चाहते है क अग्रेज तो चले गए कन्तु वे अपनी अफसरशाही भारत के सरकारी अफसरों को दे गए । आजादी मलने के बाद भी अफसरों का आलम जयी का त्यों बना हुआ है । देश की जनता के प्रति उन का रवैया ज्यो का त्यों बना हुआ है ।

वे कहते है ज्यो अफसर आते हैए चले जाते हैए क्रु संयाँ वहीं रहती हैए उनके वजन से चरमराकर टूट जाती है । अफसर जाता हैए पर अफसरी नहीं जातीए यहीं तक करिटायर होने पर भी उसकी अफसरी कायम रहती है । फाइलें वहीं की वहीं बनती और वक सत होती रहती है । ।

में लेखक व्यंग्यात्मक ढंग से अफसर के आने और जाने क्रो काव्य रुप में कहते हश्ण
अफसर जब आता हैए को चमन में बहार बनकर आता है और जाता है तो मर्तबान का अचार बनकर जाता है । अफसर के तबादले के माध्यम से एब रोचक दृश्य को व्यक्त क्ररत्ते हैं श्कहते है इस मौके पर हम क्या कहें ए वर्मा साहब हमारे बीच से जा रहे हैए इस बात का श्हमेश अफसोस है और शर्मा साहब हमारे बीच आ रहे हैए
इस बात की हमें खुशी है । आँ फस के लोगों का यह धर्मसंकट क जाने काले के लए आँसूबहाए जाएँ या आने वाले को मक्खन लगाया जाए । आँ फस के लोग चम्मच की तरह एक प्लेट से दूसरी प्लेट में आ जाते है । अफसर को घर में भी अपनी पत्नी एक पें डंग फाइल व बच्चे एक केस की त्तरह लगते है ।

लेखक कहते है अफसर से दोस्ती नहीं ए रिष्ता कया जा सकता हैए क्यों कनियम से चलना ही श्रेयस्कर होता है । क्यो क यह घोड़े क्री तरह कभी भी दुलत्ती मार सकता हैए इस लए कहा भी को जाता है क अफसर के सामने और घोड़े के

अफसर के लेखक शरद जोशी का सं क्षप्त परिचय

हिन्दी के सुप्र सद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी का उम 21 मईए 193ए को उज्जैन **मध्यप्रदेष** में हुआ । शरद जोशी के व्यग्य में हास्य कड़वाहट ए मनो वनोद और चुटीलापन हैए जो उन्हें लोक प्रय रचनाकार बनाता है । शरद जोशीजी ने समसामयिक जीवन की **विसंगतियों, त्रासदियों, भ्रष्ट** व्यवस्था के खलाफ अ भधा लक्षणा**व्यंजना** की तलवार का खूब प्रयोग कया । उनके **व्यंग्य** इतने सशक्त ए रोचक एबं पैने होते थे क उन्होंने 25 साल तक क वता के **मंच** से गद्य पाठ कया और संप्रे षत हुए । वे बिहारी के दोहेकी तरह अपने व्यब्वयों का वस्तार पाठक पर छोड़ देते है । उनके जन प्रय लेखक नेउस उक्ति क्रो चरितार्थ कया कश्साहित्य समा ज के मशाल दिखाता है श । अनेक प्रान्तीय स्थानो क साथ 1990 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री है वभू षत कया । मध्यप्रदेश सरकार ने (आपके नाम पर शरद जोशी सम्मान आरम्भ कया है । शरद जोशा वाय के इतिहास के मील के पत्थर बन गए तथा दूरदर्वा 1 एल फल्म जगा में उनके लेखन को व्यापक जनाधार मला । उनके लेखन से देश के बहु त बडे समुदाय ने दृश्य- श्रव्य माध्यम से हिन्दी की शक्ति सामर्ध्व ब व्यंजना व **कोषल** का परिचय प्राप्त कया ।शरद जोशीजी व्यंग्य के ऐसे हस्ताक्षर है ए जिनसे हिन्दी की व्यंग्य वधा सशक्त भी हुई तथा **व्यंग्य** को एक नवीन शैली चल निकली ।

जब भी मूल्यों **की बात होती** है **कई अलग अलग** सन्दर्भ **में** उपयोग से लाए जाते है जैसे जीवन मूल्य ए नैतिक मूल्य और मानवीय मूल्य । **संभवतः** इन समी शब्दों के अर्थ और अ भप्राय एक ही है । मूल्य को कसी भी नाम से क्यो न पुकारा जाए वे उन गुणों की **ओर** इं गत करने हैए जिन्हें व्यक्ति **महत्वपूर्ण** और उपयोगी मानता है तथा जिन **मूल्यो** के पालन करने से व्यक्ति अपने जिए सामाजिक मान्यता प्राप्त **करता** है ।

भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते है। जीवन की शुद्ध कियाएँ धर्म कहलाती हैं, धर्म में शांति, प्रेम और अहिंसा समाहित रहते है। ये पॉच तत्व– सत्य, धर्म शांति, प्रेम और अहिंसा– मानव मूल्य माने जाते हैं। यह भी माना जाता है कि इन मूल्यों का निर्धारण धर्म करता है।
अपनी– अपनी आस्था, परिकल्पना और अवधारणा के आधार पर विद्वानों ने मूल्यों को अलग अलग परिभाषाएँ प्रदान की है। कुछ प्रमुख चिन्तकों द्वारा दी गई परिभाषएँ निम्न है।

श्री राधाकमल मुकर्जी के अनुसार – मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किए जा सकते हैं जिन्हें अनुबंधन, अधिगम या समाजीकरण की प्रकिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो व्यक्तिगत मानको तथा आकांक्षा के रूप में परिवर्तित हो जाते है।

जॉन डीवी के अनुसार- "मूल्य का सम्बन्ध आन्तरिक रु चयों से होता हैएजिनका अनुमोदन समाज द्वारा कया जाता है **और** उनकी वस्तुनिष्ठ रूप में परख की जाती है
अरबन के अनुसार- "मूल्य उसे कहते है ए जिनसे मनुष्य की इच्छाओं की तृप्ति होती है ।"

जोड के अनुसार- "मूल्य के सम्बन्ध मे ए सत्य रूप में ऐसा प्रतीत होता है ए जैसे कसी वस्तु वा रग व रूप ए सुगंध ए तापमान तथा आकार होता है।

जोड ने अपनी परिभाषा में मूल्य को भाववाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त कयाहै । वे मानते है क मूल्यों की अनुभूति की जा सकती है । मूल्यों की सहायता से अच्छाइयों को प्राप्त करने का प्रयास कया जाता है । मूल्य व्यक्ति के वशेष

गुण हैए जिसके मानक समाज स्था पत करता है । मूल्य मानव व्यवहार के शुद्ध निर्धारकहैए मूल्यों का **संबंध** आवश्यकताओंए इच्छाओंए अ भप्रेरणाओं तथा आकांक्षाओं सेहोता है ।

उक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है क मूल्य हमारी आस्थाओं और सामाजिकमर्यादाओं यर आधारित आवरण के सद्धान्त है । जब इम अपने आचरण और व्यवहार को समाज के नीतिगत दायरे में लाते है त्तो निरे मूल्य नैतिक मूल्य वन जाते हैए जो जीवन के आधारभूत मूल्यों के समकक्ष होते है और दोनों का आधार समान होता है ।
समाज के स्था पत नियमों और मानकों के अनुरूप अपने आचरणए व्यवहार और चरित्र को डालना नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में एक सर्वमान्य अवधारणा है ।

अब प्रश्न उठता है क ऐसे मूल्यों का स्वरुप क्या है कन गुणों के निहितहै हम स्वय क्रो नैतिक मूल्यों की कसौटी पर परख सकते हैंद इसे जाने के लएहम अपने प्राचीनतमग्रंथो का सहारा ले सकते हैए जो इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते है ।

1ण भगवदू गीताए जिसे हम मानवीय सम्बन्धोंए दृष्टिकोणए दर्शनए ज्ञान और उपदेश का सवंदिकृष्ट और सर्वका लक अथ मानते हैए उसमें 26 मानवीय मूल्यों की ववेचनाकी गई है । इन गुणों में निर्थीकताए मन की प वत्रताए योग ज्ञान में परिपक्वताए देने की प्रवृतिए स्वय पर नियत्रणए त्यागए शास्त्रों का अध्ययनए स्पष्टवादिताएएसत्य निष्ठाए क्रोध का अभावए उत्सर्ग की अ भलाषाए शाजिश्चितालबालकपटाहित वहारए सभो के अति क्षमा का भावए निस्मृहता प्रति वत भावए सभ्यताए वनम्रताए ऊर्जावान३ क्षमाशील व्यक्तित्वए दृढताए शुद्धताए भूपारहित-च्छाहित स्वभाव तथा चुनौतियों का सामना करने की शक्ति आदि उत्तम व्यक्ति के प्रमुख गुण मान गए हैं और इन्हें मूल्य के रूप में निरू पत कयागया हो।

2ए हमारे दूसरे सवंमान्य धा र्मक ग्रंथ वाल्मी क रामायण में मानवीय मूल्यों सेपरिपूर्ण सम्पूर्ण व्यक्तित्व क्रो परिभा षत कया गया है । यह माना गया है क रोसाव्यक्तित्व निम्न गुणों से श्आभू षत होगा-- व्यक्ति जिसमें सदगुण होए सामर्ध्वथ होए जो धर्म में आस्था रखता होए जिसमें कृतज्ञता क्रा भाव होए जो सत्यवादी होए जिसमे सशक्त समपर्ण का भाव होए जिसका व्यवहार उभय होए जिसमे सभी के प्रति करुणा होए जो विद्वानए योग्य और प्रसन्नबित्त होए स्वय क्रो पूर्ण रूप से जानता होए जिसने क्रोध पर फाबूमा लया होए जिसका व्यक्तित्व शानदार हो और जो दूसरो से न जाता हो ।

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैए जो आज भी भारतीय सदाचार के भूल ताप से। इनमें धैर्यए क्षमाए नियमए अस्तेयए पहिंत्रताए इन्दियनिग्रहए बु द्धए वद्याए सत्य एवं क्षक्रोध का उल्लेख है । यह पना गया है क इनसे ही व्यक्ति उदात्त बनता श है । इन मूल्यों क्रो अपने अन्दर वक सत करने वालाव्यवहार ही लौकिक मूलभूत दुर्मुणा३ वामर क्रोधए लोभए मोह और अहंकार आदि से बच सकता है।

परिवार व्यक्ति के जीवन का प्रथम पडाव है। परिवार में जन्य लेने के वाद भावनात्मक सम्बन्धों का प्रारम्भ होता हैए मानवीय सम्बन्धों का महत्व समझ मे आता पारस्परिक सम्बन्धों की ऊर्जा प्राप्त होती है और परिवार की जीवन शेली को रुपमत्मसात करते हुए बच्चे का वकास होता है । वकास की यह यात्रा मनुष्य के जीवनमें सबसे महत्त्वपूर्ण और स्थायी भू मका निभाती है । अपने परिवार के जीवन मूल्योंको बच्चा आत्मसात करता है । अपनी शैशवावस्था में बच्चा अपने पारिवारिक वातावरण में रहती हैं। अपनी प्रारम्भिक अनौपचारिक शक्षा ग्रहण करता है । इस दोरान कई नैतिक प बच्चे का परिचय होता हैं- जैसे सच तोलनाए बडों का आदर करनाए ईश्वर में विश्वास रखनाए देश के प्रति श्रद्धा रखनाए पारिवारिक संसाधनों का मिलकर रहनाए दूसरों की सहायता करनाए गलत काम करने से बचना आदि श्परिवार द्वारा दिए गए संस्कार पूरी जिन्दगी हमारे साथ रहते है था परिवार के की शप हमारे व्यक्तित्व है स्पष्ट दिखाई देती हैं। कहा गया है क परिवार क्या व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है और बच्चे की भी ही उसकी प्रथम गुरु होती है में मूल्यों की पहचान परिवार और माता३ पता के माध्यम सेही बच्चे तर श पहुंचती है ।

समाज एक परिवर्तनशील व्यवस्था का नाम है । कभी "हूँ सामाजिक ढाँचा ओर सामाजिक मान्यताएँ एक समान नहीं रहती । समय और बनल ए अनुसार बदलाव आतृगृतै जो अपरिहार्य है और कुछ हद तक आवश्यक भी " मू ।
ले कन इस बदलाव व हैसकारात्मक और संरचनात्मक स्वरूप मेँ ही लाना मू इस परिवर्तन के कारण परिवार अपनी भूति एपृएँ वांछित रूप से नहीं निभा या
रहे है। आजकल माता- पता के पास बच्चों से साथ **बिताने** के लया पर्याप्त समय
ही नहीं हैंश इसके कारण बच्चों के **कियाओं** लोमोश पर माता श पता का नियंत्रण क्या
होता जा रहा है ।

इसका निवारण न केवल परिवार के अपने सामाजिक स्तर के **लिए अपितु समाज और** राष्ट्र के निर्माण के लए भी बहुत आवश्यक है । परिवार प्रथा **को सषक्त बनाना** एक सामाजिक और **राष्ट्रीय** दायित्व है । जब नैतिक मूल्योंश के रोपण की प्रथम **कडी ही** कमजोर होगी तो आगे की सभी क डयों को जोड पाना संभव नहीं होगा ।

परिवार के बाद मनुष्य के समाजीकरण क्री दूसरी कडी के रूप में शैक्ष णकसस्थाए वशेष महत्व रखती है । यह मनुष्य के जीवन का दूसरा पडाव हैए **जहाँ** पारिवारिक अनौपचारिक शक्षा के बाद व्यक्ति औपचारिक और संस्थागत शक्षा में ओर कदम रखता है । परिवार के लोगों के अलावा उसका व्यक्तियों से होता हूँ जिनमें शक्षक और सहपाठी प्रमुख रूप प्रभा वत करते है । नेतिक मूल्यों क्रो प्रदान करने में इन दोनो की रा धका परिवार मेंसमान ही बहुत अहम् रहती है । वशेष रूप है बच्चों के बालपन पर शक्षक का प्रभावगहरा लगभग स्थायी रहता है। एक अच्छा शक्षक अपने वद्यार्थी के लए एवअनुकरणत्य आदर्श व्यक्ति रहता है। शक्षक क्रो कहीं हुई हर वात वद्यार्थी के लक्षाहयएओर अन्तिम होती है । यही कारण है क जब भी नैतिक मूल्यों की बात **होती** हैंए शौक्ष णक सस्थाओंकी उपयो गता और उपादेयता की चर्चा अवश्य होती है। नेतिक मूल्यों के रोपण में समाज की बहुत महत्वपूर्ण भू मका है । व्य वत्सामाजिक दायरे से बहुत कुछ सीखता है । समाज व्यक्तियों वे" अस्था समाज को निर्माण तेयार **के लिऐ** करता है और व्यक्ति अपने क्रयाकलापों के उच्च शक्षा के छात्र जो देश की वा पीढी का**आवष्यक** के प्रति जवाबदेही होना अत्यन्त **आवष्यक** है ।
उनके आसपास का समाज कस प्रकार**से** उनके हित के लए कार्य कोइसकी योजना तैयार की जानी चाहिए। समाज कई **परिवारों को** एक **संयुक्त** इकाई हैए जिसकी सबसे छोटी कडी परिवार है । समाज की अपनी मान्यत्ताए ओंर नियम है । साथ ही कई समाजिक कुरीतियों भी है जो करती जा रहीं है । युवा पीढी समाज क्रो एक नया रूप **प्रदान** वश्रीतिदुसे हैएसमाज की उपयो गता बढा सकती है औरसमाज को सामाजिक हैं मुक्त कर सकती इसके लए युवाओं को अपना स्वयं का चारित्रिक मू मण करना होगाए सामान्य नेतिक मूल्यों का **पालन** करना होगा तथा अपनी आत्मशक्ति द्वारा समक्ष में परिवर्त्तन जाने का प्रयास करना होया । यह प्र क्रया **बात** लम्बी होगीए इसमें कई कठिनाइयों आयेगी और अनेक असामाजिक शक्तियों पीढी को इस प्रकार का रचनात्मकए क्रान्तिकारी कार्य करने से रोकेगी। ले कन

सामाजिक हित है और समाज को **राष्ट्रउपयोगी बनाएगी** रुकावटों का धेर्य **का** सामना करना होगा । प्रयास में इस प्रकार की **रूकावटे आऐंगी।**

नैतिक मूल्यों की शक्षा को घात्यचर्या का अनिवार्य अग बनाने की **बात**
स्वागत योग्य है । कई बार हम जिन **को** जानते हैए समझते भी है फर भी जीवनमें उनका **वैसा** उपयोग नहीं कर **पाते** है जैसो क अपेक्षा रहती है । इस लए नैतिक मूल्योंकी वात बार बार व भन्न स्वरूपों में उन्हें के साथ को जाए तो हम उनकी अन्तरात्मा तक पहुँच सकते है और उन्हें मान सक रूप से **संवेदनषीलता** ।
यह एक सतत् प्रयास है और इसका निर्वहन हर स्तर पर राष्ट्र के सन्दर्भ मे कया जाना चाहिए।

नैतिक मूल्यों के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था बिल्कुल **भिन्न** प्रकृति ही होनो
चाहिए । एक समसत्र में इसकी अ धकता दस कक्षाएँ लगनी चाहिएए जिनमे आप की
उपस्थिति अनिवार्य हो । शेष शक्षा अनौपचारिकए अवलोकन आधारितए व शष्टश्प्रसंगों

के सन्दर्भ है युवा पीढी क्रो प्रति क्रयाओं को जानते हुए उन्हें प्रेरक अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी लोगों है मलने का अक्सर देकर दी जा सकती है । शक्षक इनके अलावा अन्य गति व धयाँ भी अपने ववेक के अनुसार आयोजित कर सकते है । हमारा उद्देश्य युवा पीढी को सदाचारीए संवेदनशीलए जिम्मेदार नागरिक **बनाने का है।** नैतिक मूल्य के कालखंडों का उपयोग हम गति व ध आधारित अनौपचारिक ले कन प्रभाती ३ शक्षा प्रदान करने के लए**तभी** तो सफलता मल सकती है ।

1ण नैतिक मूल्य से आशय-व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को समाज के समक्ष लाने कर कार्य नैतिक मूल्य ही करते है । इसका बहुत गहरा सम्यन्ध मनुष्य के व्यक्तित्व से होता है । नैतिक मूल्य मे दयाए करुणाए ममताए समता ए शीलए ववेकए वनम्रताए कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों का समावेश होता है । नैतिक मूल्य सामूहिक भी होते है और व्यक्तिगत भी ।

2ण वर्त्तमान युग में नैतिक मृल्य की आवश्यकता **क्यो** -वर्तमान में पश्चिमी संस्कृति ने मानवीय व नैतिक मूल्यों क्रो **सोपान** की कगार पर लाकर खडा कर दिया है ।

आज संयुक्त परिवारों की परम्परा टूटती जा रही हैंए इंसान ही इंसान के खून का पासा बन बैठा है जो नैतिकता एल मानवता मनुष्य के हृदय में वराजित होती भी वह आजकहीं देखने जो नहीं मलती । इस लए समाज सुधार व व्यक्तिगत निर्माण में नैतिक मूल्यों की **गुण** स्थापना पर अत्य धक बल दिया जाना चाहिये । इस संदर्भ में हम निग्न बिन्दुओं का अध्ययन कर सकते है-

;1द्व चरित्र निर्माण में सहायक ।

;2द्व समाज में हिंसक घटनाओं को रोको **पूरे** स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु महत्वपूर्ण ।

;3द्व समाज व राष्ट्र का चहुंमुखी **विकास।**

;4द्व उच्च आदशों की स्थापना ।

;5द्व देश में शांति हैं सुरक्षा **एवं** सौहार्दपूर्ण **वातावरण** का नि र्मत्त होना ।

;6द्व धर्म और अध्यात्म क्रो भावना ।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है क नैतिक मूल्य हीव्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हुए उसे संस्कारों का प्रणेता बनाने की दिशा में श्अग्रसर होते है । समाज के अनैतिक तत्वों द्वारा की जाने चाली हिंसक घटनाएँ नैतिक मूल्यों के **पतन** के कारण ही जन्म ले रही हैंए जिस पर नियंत्रण माना वर्तमान युग है आवश्यक प्रतीत होता है । घर्म ओंर अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करने में भी नैतिक मूल्यों को भू मका**अहम्** हैं । नैतिक संस्कारों क संरक्षक कहलाने **वाले** मनुष्य ही समाज और राष्ट्र के वकास**में** अपनी भागीदारी दे सकते हं ।

ध्आचरण की सभ्यताश सरदार पूरन संह द्वारा मानव व्यवहार से जुड़े एकसंवेदनशील वषय पर लखा गया एक साहित्यिक सारग र्भत निबन्ध है इसमेंनिबन्धकार ने बताया है क आचरण उस व्यवहार को कहा जाता है जो व्यक्ति स्वयके प्रति अपनाता हैए कन्तु वही क्रयाकलाप या मनोवृत्ति जब दूसरों के प्रति अपनाताहैए तो उसे व्यवहार कहते है । हमारा आचरण तभी शुद्ध हो सकता हैए जब हम कसीभी कार्य को बडी **ईमानदारीपूर्वक** निभाते हैए चाहे वह उच्च हो या निकृष्ट । श्रेष्ट आचरण ही मानव जाति का उद्धार कर सकता हैए समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है । श्रेष्ठ आचरण के लए हमें प्रकृति की गोद में जाना होगा ।

वद्याए कलाए कोराए साहित्यए धनए राजस्व से अ धक जीवन में प्रकाश आचरणकी सभ्यता द्वारा ही आता है ।

हमें अपना आचरण ही उच्च शखर पर पहुंचाता है ।श एक नई स्कूर्तिए नई चेतनाए नया जोशए नई अनुभूति आचरण क्री सभ्यता द्वारा ही हा सल होती है । आचरण की सभ्यता सदैव मौन रहती है । नम्रताए दयाए पेमए उदारता सभी आचरण के मौन व्याख्यान है । यह सब कुछ न बोलते हुए भी बिना भी अपने भाव व्यक्त कर देते है । **बोले** मनुष्य जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चरस्थायीरहता है । आचरण के **मौन** की सुगंध से प्रेम और प वत्रता सारे जगत का कल्याण करती है ।

आचरण **की** सभ्यता से मनुष्य के ऊपर से कुसंस्कारों **की** दृष्टि बदल **जाती** है **और** श्रेष्ठ आचरण वाला मनुष्य उनके मन को शीतल कर देता है । दुख से पी डत मनुष्य आनंद का अनुभव करने लगता है । अच्छे आचरण **से** मनुष्य के कठोर से कठोर हदय को कोमल बना दिया जा सकता है । इससे मनुष्य को नया जीवनदान मलता है । नु -आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊंचे कलश जाला मंदिर है । इसके बनने मेँ अनंत काल का समय लगा । पृथ्वी बन गईए तारागण बन गएए सूर्य बन गया कन्तुआचरण के सुन्दर रूप के दरनि नहीं हुए । कन्तु कहीने कहीं इसकी सुन्दर छटा अवश्य दिखाई देती है ।

लेखक बताना चाहते है क कसी के आचरण का प्रभाव इतना स्पष्ट होता हैक चाहे उन पर उपदेशों का प्रभाव न पडे परन्तु आचरण का प्रभाव अवश्य पडता है । धर्म और अध्यात्म वद्या के पौधे को आरोग्यबर्धक भूति देने व प्रकाश देने का कार्य शुद्ध आचरण ही करता है । संसार की खाक छानकर आचरणरूपी स्वर्ग हाथ आता है । यया वह बिना कसी प्रयत्न के मलता है । धर्म के आचरण की प्राप्ति यदि ऊपरी आडंबरों से पूर्ण होती तो आज प्रत्येक भारतवासी सूर्य के समान शुद्ध आचरण करने बाला हो जाता क्यों क केवल माला जपने से जाप नहीं होताए गया नहाने से स्वर्ग नहीं मलता । श

प्राकृतिक सभ्यता के आने पर ही मान सक सभ्यता आती है । मान सक सभ्यताहोने पर आचरण की सभ्यता की प्राप्ति होती है । जब तक अज्ञानी का आचरण अशुद्ध है तब तक ज्ञानवान के आचरण की पूरी परीक्षा नहीं । आचरण की सभ्यता का देश निराला है । न इसमें मान सक झगडे है न शारीरिकए न आध्यात्मिका जिस समय आचरण क्री सभ्यता संसार में आती है उस समय मनुष्य मेँ मनुष्यत्व आ जाता है ।

चारों ओर आकाशमय वातावरण हो जात्ता है ब्रहाताद सुनाई देने लगता हैए नारद की बीणा बजने लगती है और सरस्वती स्वय वराजमान हो जाती है ।

सरदार पूरन संह ने अपने निबन्धश्आचरण की सभ्यताश में शुद्ध आचरण पर बल दिया है । आचरण से आशय उस क्रयाकलाप व मनोवृत्ति से हैए जो हम अपने स्वयके **प्रति** अपनाते है । जबकी व्यवहार वह क्रयाकलाप व मनोवृत्ति है जो हम कसी दूसरेके **प्रति** करते है । यदि हम अपने कर्त्तव्य का पालन सही रूप में कर रहे हैए फर वह हमारा कर्त्तव्य चाहे एक कृषक का हो या फर कोई सा भी तो हम श्रेष्ठआचरण कर रहे है। आचरण की सभ्यता निबंध में निबन्धकार ने विभिन्न उद्धरणों के माध्यम से यह साबित करने का प्रयास किया है कि श्रेष्ठ आचरण ही सबसे बड़ी सभ्यता है। यदि हमें वास्तव में मनुष्यत्व को प्राप्त करना है तो अपने आचरण को श्रेष्ठ सुन्दर तथा दूसरों के प्रति अनुकरणीय बनाना होगा। सभ्यता तथा संस्कृति की प्रत्यूष बेला से ही हमारा रिष्ता प्रकृति से रहा है और हमें श्रेष्ठ आचरण की प्राप्ति के लिए प्रकृति को गोद में जाना होगा। यही इस निबंध का सार या केन्द्रीय भाव भी है।

हमारे नैतिक जीवन में भी उच्चतम स्थिति पर पहुंचने के लए अन्तज्ञक्तित्मक दृष्टि अनिवार्य है । साहसपूर्ण पथ का अनुसरण करने चाला चीरए उस अनुसन्धान करने वाले आ वष्कारक के समान हैए जो कसी वज्ञान केबिखरे हुए सतुष्ट तत्वों को क्रमबद्ध कर करता हैए या वह उस कलाकार के सदृश है जो एक संगीत की रचना करता है या कसी भवन का डजाइन तैयार करता है । जीवन की कला पुराने बोसीदाअ भनयों का रिहर्सल नहीं है । ब्लेक ने अपनी एक आकर्षक वरोधाभासपूर्ण उक्तिमें कहा थाए ष्जो व्यक्ति कलाकार-नही" हैए वह ईसाई भी नहीं है ।श **जीवन** एक ऐसा खेल है जो तभी समाप्त होता है जब व्यक्ति उससे अवकाश ग्रहण करता है । उसके लए दक्षता और साहस की आवश्यकता होती है । साहसी खलाडी तकनीक है निपुणहोता है । जब स्नेहं" स्थिति को समझ लेता है तो वह सुनिश्चित **अन्तबुद्धि** से आगे बढता है । जीवन की शतरंज की फ़ड़ पर अलग-अलग मोहरों की अलग-अलग ताकते है

और उनके जोडे अनेक तरह से बन सकते है और उनका भ वष्य-कथन पहले है ही कया जा सकता है । अच्छे खलाडी में सही कार्य की भावना होती है और वह यह अनुभव करता है क यदिवह उस भावना के अनुसार कार्य नहीं करता तो वह अपने अति ही झूठा होगा । कसी नाजुक स्थिति में आगे चाल चलना एक सृजनात्मक कार्यहै । वह अपनी प्रकृति के अनुसार आत्मा के भीतर है उद्भूत होता है । इसमें एक प्रकार को गुप्त और सजीवन अनिवार्यता होती है ।

धा र्मक प्रतिभाशाली महापुरुषों के उदाहरण मौटे तौर यर मनुष्य के पथप्रदर्शन के लए उपस्थित रहते है और जब उनका सम्बन्ध कन्हें संगठनों है होताहै तो भी वे महात्जीबन को ऐसे क र और अपरिवर्तनीय नियम या सूत्र मे परिणीत्करने कीए एक गुहा रहस्य को एक ऐसी दार्शनिक प्रणाली में परिवर्तित करने क्री जल्दी नहीं होतीए जिसे हर व्यक्ति रट सके। यदि हमारे मन्दिरए मस्जिद और गरजेयह समझें क उनका मुख्य कार्य हमें प वत्र ज्ञान देने के बजाय हमारी आत्मा क्रो उत्बुद्ध और सजग करना है तो वे ईश्वर के ऐसे मन्दिर बन जाएँगे जिनमें व्यापकता
और **सौहार्य** का साहस होगा और जो अपने आध्यात्मिक वातावरण है व भन्नधा र्मक वचारों आर रु चयों के लोगों का स्वागत कर सकेंगे । जीबन या वातावरण की सम्भावनाएँ अग णत और अपरिमेय है और उसमें व भन्न मतों केचार-भेद के लह पूरी गुजाइश रहती है । यदि हमारा यह वश्वास हो क मनुष्क्रो उसके मन की कोमलता के लए कसी सहारे की आवश्यकता है तो हम उसे प्रतीक और उदाहरण प्रदान कर लपकते है कन्तु उसके बाद शेष सब-क्रुछ हमें मनुष्य के अन्तर है वद्यमान ईश्वर पर ही छोड देना चाहिए। सुकरात की बातें सच्चा उपदेशक केवल वाई का काम काला हैं । हिन्दू धर्म के समान कसी धर्म मेनिष्चित आकार का जो अभाव है वह मुझे एक उच्चतर किस्म की निष्चितता का द्योतक प्रतीत होता है। धर्म का अर्थ है ब्रहाण्ड में ईष्वर के साथ चेतना ऐक्य और उसका मुख्य साधन है प्रेम।